भारत सरकार

इस्पात मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 159

04 दिसंबर, 2023 को उत्तर के लिए

इस्पात क्षेत्र में वृद्धि

159. श्री संजय राउत:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि देश में इस्पात उद्योग इस्पात क्षेत्र के लिए प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और विकास में निवेश करने में बहुत पीछे है;

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या यह भी सच है कि अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान और प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता के कारण अतिरिक्त लागत आती है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर

इस्पात राज्य मंत्री (श्री फग्गन सिंह कुलस्ते)

(क) से (घ): इस्पात उद्योग एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र होने के कारण, प्रौद्योगिकियों में निवेश करने संबंधी निर्णय अलग-अलग कंपनियों द्वारा वाणिज्यिक सोच-विचारों और बाजार की गतिशीलता के आधार पर लिये जाते हैं। इस्पात कंपनियां अपने आधुनिकीकरण और विस्तार कार्यक्रमों में वैश्विक रूप से सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध प्रौद्योगिकियों (बीएटी) को अपना रहीं हैं।

भारत में लौह और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास कार्यक्रम मुख्य रूप से स्वयं लौह और इस्पात कंपनियों, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाओं, शैक्षणिक संस्थानों आदि द्वारा चलाए जाते हैं। इस्पात मंत्रालय इस योजना अर्थात "लौह और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास का संवर्धन" के अंतर्गत लौह और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान चलाने के लिए इस्पात उद्योग, सीएसआईआर प्रयोगशालाओं, शिक्षाविदों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत कवर किये गए प्रमुख क्षेत्रों में इस्पात क्षेत्र के समक्ष आ रहे सामान्य मुद्दों जैसे कि अपशिष्टों का उपयोग, दक्षता और उत्पादकता में वृद्धि, ऊर्जा खपत और उत्सर्जन को कम करना आदि के समाधान के लिए अनुसंधान शामिल है।

******